|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 31. März 2024 | | |
| **Ostersonntag B** | | |
| Erste Lesung: Apg 10, 34a.37-43; 2. Lesung: Kol 3, 1-4 oder 1 Kor 5, 6b-8 | | |
| Evangelium: Joh 20, 1-9 oder Joh 20, 1-18 oder Mk 16,1-7, bei einer Abendmesse Lk 24, 13-35 | | |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 318, 1-3  GL 328 | Christ ist erstanden  Gelobt sei Gott |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 118 (117), 1-2.16-17.22-23 |  |
|  | Kehrvers: GL 66 | Das ist der Tag |
|  | oder |  |
|  | GL 329 | Das ist der Tag den Gott |
|  |  |  |
| Sequenz: | GL 320 | Singt das Lob dem Osterlamme |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Unser Paschalamm ist geopfert: Christus.* | |
|  | *So lasst uns das Festmahl feiern im Herrn.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 760 / 761 | Wahrer Gott, wir glauben dir |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 754 oder | Halleluja, lasst uns singen |
|  | GL 326 | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 380, 2+3 | Alles, was dich preisen kann |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 762, 1-3 | Verklärter Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 755, 1-3 | Halleluja! Auferstanden |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 525, 1-4 | Freu dich, du Himmelskönigin |